B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 3(b)
Topic – समस्या-समाधान विधि
(Problem-Solving Method)
Lecture No. - 57

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from the last lecture.....

समस्या-समाधान पद्धति के गुण
(Merits of Problem-Solving Method)

1. यह ज्ञानार्जन की मनोवैज्ञानिक पद्धति है।
2. यह समस्या-समाधान की क्षमता उत्पन्न करती है।
3. यह स्वाध्याय की आदत का निर्माण करती है।
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।
5. उच्च स्तरीय चिंतन कौशलों का विकास होता है।
6. शिक्षार्थी दूसरों द्वारा साझा किए गए विचारों को स्वीकारना सीखते है।
7. परिकल्पनाओं की रचना एवं सत्यापन की कला का अभ्यास होता है।
8. छात्र तथ्यों का एकत्रीकरण , व्यवस्थापन एवं मूल्यांकन करना सीख जाते है।
9. आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।
10. छात्रों में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता उत्पन्न होती है।
11. वैयक्तिक एवं सामूहिक क्षमताओं का विकास होता है।
12. इस विधि से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
13. नये ज्ञान की खोज में सहायक है।
14. अतीतकालीन संदर्भों का नवीन पिरिप्रेक्ष्य में देखने एवं प्रयोग में लाने के गुणों का विकास होता है।

समस्या-समाधान विधि के दोष
(Demerits of Problem-Solving Method)

1. छोटी कक्षाओं के लिये व्यवहारिक नहीं है।
2. सभी विद्यार्थी इस विधि द्वारा नहीं सीख पाते हैं।
3. इसके बारम्बार उपयोग से इसमें यान्त्रिकता एवं नीरसता आने का भय रहता है।
4. निष्कर्ष सदैव संतोषजनक नहीं होते है।
5. समय अधिक लगता है। अतः समय पर पाठ्यक्रम पूरा करने की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।
6. इसके प्रयोग के लिए निर्देशात्मक सामग्री की बहुत आवश्यकता होती है।
7. इसमें बालक के शारीरिक क्रिया की उपेक्षा होती है।

(**समाप्त**)